ISSN-2231-2161

कथा क्रम

वर्ष : 19 अंक : 73

जुलाई-सितम्बर-2017

कथासाहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

कहानियां

10 सुषमा मुनीन्द्र : कुछ रिश्ते महज रिश्ते नहीं होते
20 अनन्त कुमार सिंह : कंटीली झाड़ियों में फूल
25 प्रियदर्शन मालवीय : ब्लैक होल
32 शर्मिला बोहरा जालान : जन्मपत्री
57 प्रभात समीर : इसको भी चांद छूने दो
63 सोनी पाण्डेय : बुद्धि शुद्धि महायज्ञ
70 डॉ. अमिता नीरव : आंसुओं के रिश्ते
74 प्रियंका गुप्ता : जैसे उनके दिन बहुरे....

लघुकथाएं

24 प्रताप दीक्षित : विलोम
35 विनय कुमार : सिंदूर
41 अमरीक सिंह दीप : धर्म प्रधान देश
47 विनय कुमार : अंधेरे
62 कमल चोपड़ा : शह
93 सुनील गज्जाणी : बटवारा

कथा नेपथ्य

4 मधुरेश : सांस्कृतिक बहुलता की यायावरी-विशेष सन्दर्भ : ब्रह्मपुत्र

लेख

36 विनोद शाही : स्त्री विमर्श के 'भीतर' से 'पार झांकने की कोशिश'
42 डॉ. राम विनय शर्मा : बहुवचनात्मकता, तरलता और सरोकार
48 डॉ. रामकृष्ण यादव : आदिम जनजातियां एवं उनकी परंपराएं
54 डॉ. गौरी त्रिपाठी : स्त्री आत्मकथाओं का प्रतिरोधी स्वर

कविताएं

80 विमलेश त्रिपाठी : धूप, कोहरा, काजल, दो हजार सत्तरह की एक शाम, न कुछ की तरह कुछ
81 दिनेश कुमार : वह भूख
82 अमरदीप सिंह : कविता
82 कविता पनिया : हवा के साथ, वृक्ष सूख न पाएं
83 नेहा शेफाली : मंथन, परछाई
84 सीमा स्वधा : कविता
84 सिद्धेश्वर सिंह : जगहें, कविता के शब्द

राग लन्तरानी

86 सुशील सिद्धार्थ : भिखारीदास से भिखारी प्रसाद तक

कथायात्रा

89 प्रत्यक्षा : सपने में कोहाकू मछलियां (ज़रा सा जापान)

समीक्षाएं

94 शाम की झिलमिल : आत्म सत्य से अन्य-सत्य तक (उपन्यास): रमेश दवे, स्मृतियों की पटरियों पर चलते हुए (संस्मरण) : रजनी गुप्त, अकादमिक जगत के दागदार चेहरे (उपन्यास) : माधव नागदा, रचनात्मक संभावनाओं के प्रति आश्वस्त करती कहानियां (कहानी संग्रह) : प्रताप दीक्षित।

2 सम्पादकीय : लोकतंत्र बनाम भीड़तंत्र
आवरण कलाकृति : विनोद शाही
रेखाचित्र : संदीप राशिनकर

संपादक
शैलेन्द्र सागर
संपादन सहयोग
रजनी गुप्त
सहयोग
मीनू अवस्थी
प्रबन्ध सहायक
राम मूरत यादव
संपादन संचालन : अवैतनिक

संपादकीय सम्पर्क :
डी-107, महानगर विस्तार, लखनऊ-226006
दूरभाष : 09415243310
e-mail : kathakrama@rediffmail.com
e-mail : kathakrama@gmail.com

इस अंक का मूल्य : 35 ₹

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत त्रैवार्षिक-450 ₹, आजीवन 3000 ₹

संस्थाएं : वार्षिक-200 ₹, त्रैवार्षिक-550 ₹, आजीवन 3500 ₹

(सारे भुगतान मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा कथाक्रम के नाम से किये जायें)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, 257- गोलागंज, लखनऊ। फोन : 0522-2200425

स्त्री आत्मकथाओं का प्रतिरोधी स्वर

□ डॉ. गौरी त्रिपाठी

आत्मकथा लिखना हमेशा से चुनौतीपूर्ण रहा है- उस पर यदि स्त्री सच लिखे तो घर और समाज दोनों से बेदखल हो जाए। यह सच अगर आत्मकथाओं के माध्यम से आए तो और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि यह उनकी खुद की आवाज होती है जिनसे स्त्री जीवन और उसकी जटिलताओं को समझा जा सकता है। आत्मकथाओं का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। यह बहुत ही साहसिक विधा मानी जाती है। आत्मकथा लिखना किसी के लिए भी मुश्किल है लेकिन स्त्रियों के लिए यह चुनौती बन जाता है। इन आत्मकथाओं का उद्देश्य उनके निजी जीवन की पड़ताल करना भर हो पाता है। क्या स्त्री आत्मकथाओं की यही सफलता है ? यह आत्मकथाएं दरअसल सारी स्त्रियों की कथाएं होती हैं जिनमें से गुजर कर हम समाज का असली चेहरा भी देखते हैं। स्त्री मनुष्य होने और समझे जाने का भी अधिकार चाहती है लेकिन समाज स्त्री आत्मकथाओं पर भी सामंती सोच रखता है। वह आत्मकथा में वर्णित प्रेम संबंधों व अन्य गोपन प्रसंगों पर ज्यादा टकटकी लगाता है। आत्म कथाएं सिर्फ निजी जीवन का कच्चा चिट्ठा नहीं हैं। इस सोच की शिकार पश्चिमी देशों की स्त्रियां भी हुई है लेकिन उन्होंने वर्जनाओं को पीछे छोड़ दिया है। हम अब भी स्त्री को यौन शुचिता के बाड़े से घेरते रहते हैं। स्त्री प्रश्नों के लिए कम यौनिकता के संदर्भ में स्त्री आत्मकथाएं ज्यादा पढ़ी जाती हैं।

आत्मकथा साहित्य से अधिक निजी नजरिए से देखा गया सामाजिक यथार्थ का दस्तावेज होता है। स्त्री अगर आत्मकथा लिखती है तो उसका मूल्यांकन और भी कड़ा हो जाता है। आत्मकथाओं की श्रृंखला में हम अक्सर वर्जीनिया वुल्फ की 'अपना कमरा' को जरुर याद करते हैं। यह कृति आज भी आत्मकथा का मानक है। यहां जीवन की छोटी-छोटी चीजों पर चर्चा है, यह छोटी-छोटी चीजें स्त्री के लिए बहुत मायने रखती हैं। सोचने वाली बात है स्वतंत्रता का पुरुष के लिए कोई मतलब नहीं होता, स्त्री जीवन भर उसके लिए संघर्ष करती है। वर्जीनिया वुल्फ जीवन की छोटी-छोटी चीजों को साहित्य में शामिल करके साहित्य का पैमाना ही बदल देती हैं। यह आत्मकथा पितृसत्ता की तीखी आलोचना है। स्त्रियों के पास कभी आधा घंटा भी नहीं होता जिसे अपना कह सकें। किताब की भूमिका में उन्होंने लिखा है, 'एक महिला को अगर कथा लिखनी है तो उसके पास पैसा और कमरा जरूर होना चाहिए'। दरअसल यह उस वर्चस्वशाली पुरुष मानसिकता पर प्रहार है जिसने स्त्री को रचनात्मकता से वंचित रखा है। 'अपना कमरा' की भूमिका में मोजेज माइकल ने लिखा है, 'स्त्री के लिए लेखन के रास्ते में अनेक अवरोध हैं, व्यावहारिक भी और अन्यथा भी। उसके पास साझा बैठक है। अलग से अपना कमरा नहीं है, अपने कहने को आधा घंटा भी नहीं है। यह स्थिति कब बदलेगी। कब वह तमाम पुरुषों की चेतावनियों, परामर्शों को धता बताते हुए बस अपनी लीक पर चल निकलेगी। स्त्री का पैसा कमाना और एक कमरा होना चिंतन करने की शक्ति और स्वयं के लिए सोचने की शक्ति से जुड़ाव होना है।'

आत्मकथाओं की शुरुआत हम 18वीं शताब्दी से मानते हैं। उस समय कोई महान

डॉ. गौरी त्रिपाठी
युवा समीक्षक,
विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आलोचना एवं समीक्षात्मक लेख प्रकाशित
सम्प्रति : सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुर्नवास विश्वविद्यालय, मोहान रोड, लखनऊ
मो. 9452206059